प्रेस विज्ञप्ति

गोविन्द बल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय पंतनगर, जिला- ऊधमसिंह नगर (उत्तराखण्ड)

वैज्ञानिकों ने सुझाये वर्षा ऋतु में रोगों व कृमियों से पशुओं को बचाने के उपाय

पंतनगर। २६ जून २०१८। वर्षा ऋतु में पशुओं में रोगों की संभावना बढ़ जाती है। इस दौरान वातावरण में अधिक आद्रता तथा तापमान में अधिक उतार-चढ़ाव से पशु की पाचन प्रक्रिया के साथ-साथ उसकी आन्तरिक रोगरोधक शक्ति पर भी असर पड़ता है परिणामस्वरूप पशु अनेक रोगों से ग्रसित हो जाते हैं। वर्षा ऋतु में पशुपालन से वांछित उत्पादन लेने और पशु को स्वस्थ रखने के लिए इनकी उचित देखभाल की आवश्यकता है।

पशुओं में वर्षा ऋतु में होने वाले प्रमुख रोगों और उनके नियंत्रण के बारे में बताते हुए पंतनगर विश्वविद्यालय के पशुचिकित्सा एवं पशुपालन महाविद्यालय के पशुविकृति विज्ञान विभाग की सह प्राध्यापिका, डा. सीमा अग्रवाल, ने कहा कि वर्षा ऋतु में पशुओं में सबसे ज्यादा गलघोटू बीमारी होती है। इस बीमारी में पशु तेज ज्वर से पीड़ित होता है एवं उसके गले में सूजन आ जाती है, जिस कारण उसे साँस लेने में तकलीफ होती है व 'घर्र-घर्र' की आवाज आती है तथा अंत में दम घुटने से मौत हो जाती है। इसकी रोकथाम के लिए वर्षा शुरू होने से पहले पशुपालक को नजदीकी पशु चिकित्सालय में जाकर पशुओं को गलघोटू रोग का टीका लगवाना चाहिए। इसके उपचार के लिए पशुपालक को रोग-ग्रसित पशु को दूसरे स्वस्थ पशुओं से अलग कर पशु चिकित्सक द्वारा उपचार कराना चाहिए।

वर्षा ऋतु में पशुओं में लगने वाला दूसरा रोग लंगड़ा बुखार है। इसमें पशु तीन दिन तक तेज ज्वर से ग्रसित रहता हैं। उसे खड़े रहने में कमजोरी महसूस होती है जिस कारण वह बैठा रहता है। इसके उपचार के लिए मीठा सोडा तथा सोडियम सैलिसिएट को बराबर मात्रा में पिलाने से पशु को आराम मिलता है। बरसात के मौसम में चेचक रोग (स्माल पॉक्स) की समस्या भी पशुओं में देखने को मिलती है। यह रोग पशुआवास में गन्दगी से होता है। इसमें पशु की ल्योटी (आयन) पर लाल रंग के दाने निकलने के साथ-साथ तेज बुखार भी होता हैं। इसके उपचार के लिए डा. अग्रवाल ने बताया कि थनों एवं ल्योटी को पहले पोटेशियम परमैंगनेट (लाल दवा) के घोल से धोने और उसके पश्चात मलहम लगाने से पशु को आराम मिलता है। बुखार होने पर ज्वररोधी दवायें भी दी जा सकती हैं।

बरसात होते ही पशु परजीवियों की संख्या में स्वतः अत्यधिक वृद्धि हो जाती है, जिससे पशुओं को शारीरिक व्याधियों का सामना करना पड़ता है। यह प्रायः दो प्रकार के होते है। अन्तःपरजीवी, जैसे पेट के कृमि तथा बाह्यपरजीवी जैसे चीचड़, मेंज, जूं आदि। इन परजीवियों से ग्रसित पशु में सुस्ती, कमजोरी, अनीमिया (खून की कमी) एवं दूध में कमी देखने को मिलती है। पशु को पाचन प्रक्रिया में शिकायत रहती है, जिससे पेट में दर्द और पतला गोबर आता है। इनके उपचार के लिए पशुचिकित्सक की सलाह से पशुओं को उनके वजन के अनुसार परजीवीनाशक दवा नियमित रूप से दो बार पिलाना चाहिए। पशुओं को स्वच्छ एवं सुपाच्य आहार एवं स्वच्छ पानी देना चाहिए। इससे बचाव के लिए बारिश के मौसम में पशुओं को तालाब एवं नाले के किनारे नही लेकर जाना चाहिए तथा इनके किनारे उगी घास नही खिलाना चाहिए, क्योंकि ये घास कृमियों के लारवों से ग्रस्त होती है, जो पेट में जाकर कृमि बन जाते हैं और अनेक विकार उत्पन्न करते हैं।

डा. अग्रवाल ने कहा कि इन बीमारियों के साथ-साथ पशुपालकों को पशु प्रबंधन सम्बन्धी बातों का भी ध्यान रखना चाहिए। पशुशाला की खिड़कियाँ खुली रखनी चाहिए तथा बिजली के पंखों का प्रयोग करना चाहिए, जिससे पशुओं को उमस एवम् गर्मी से राहत मिल सके। पशुशाला में मलमूत्र की निकासी का उचित प्रबंध होना चाहिये तथा इसे दिन में एक बार फिनाइल के घोल से अवश्य साफ करना चाहिए, जिससे दुर्गन्ध फैलाने वाले बैक्टीरिया का असर कम हो। पशु को खेतों के समीप गड्ढे या तालाब का पानी पिलाने से परहेज करना चाहिए, क्योंकि इस दौरान किसान खेतों में खरपतवार एवम् कीटनाशक का प्रयोग करते है जो रिसकर गड्ढों व तालाबों में आ जाते हैं। पशु को बाल्टी से साफ एवं ताजा पानी पिलाना चाहिए। पशु को हरा चारा अच्छी तरह साफ कर खिलाना चाहिए, क्योंकि बरसात के समय घोंघों का प्रकोप अधिक होता है एवं यह चारे के निचले तने एवं पत्तियों पर चिपके होते है। घोंघें मुख्यतः यकृत कृमि के संवाहक होते हैं, जिनके कारण पशुओं के यकृत में रोग उत्पन्न होते है। पशु अगर चारा नहीं खा रहा है तो उसे तुरन्त अन्य स्वस्थ्य पशुओं से अलग कर देना चाहिए और उसका बिछावन, चारा, पानी और बर्तन भी अलग रखने चाहिए तथा तुरन्त पशुचिकित्सक से संपर्क करना चाहिए।

पशुपालकों को अपने पशुओं का टीकाकरण अवश्य करवाना चाहिए, जैसे गलघोंटू के टीके, मुँहपका-खुरपका रोग के टीके इत्यादि। पशुचिकित्सक की सलाह अनुसार १५ दिन के अन्तराल पर परजीवियों की रोकथाम हेतु कृमिनाशक दवाइयों का प्रयोग करना चाहिए। इस मौसम में अन्य कोई विकार पशुधन में उत्पन्न होते हैं तो तुरंत पशुचिकित्सक की सलाह लेकर उपचार करना चाहिए।

(नरेश कुमार)
समाचार समन्वयक